रीतिकाल की आलोचना

-दिव्या
अतिथि प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

* साहित्य की उपयोगितावादी दृष्टि के प्रभाव में द्विवेदी जी की दृष्टि कलात्मक मूल्यों की ओर उतनी नहीं गयी है जितनी अपेक्षित थी, फलतः रीतिकालीन साहित्य के मूल्यांकन का वे कोई नया मानदण्ड निर्धारित न कर सके।

काव्यभाषा के मर्मज्ञ डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी अपने इतिहास-ग्रंथ 'हिन्दी-साहित्य और संवेदना का विकास' में रीतिकालीन काव्य-परम्परा की गहन छान-बीन की है। रीतिकालीन कविता के

आविर्भाव के कारणों को अन्वेषित करते हुए उन्होंने लिखा है कि भक्ति और शृंगार की विभाजक रेखा सूक्ष्म है। रीतिकाल में प्रेम और भक्ति की संयुक्त अनुभूति में से भक्ति क्रमशः क्षीण पड़ती गयी और प्रेम का शृंगारिक रूप केन्द्र में आ गया। भक्तिकाल का रीतिकाल में रूपांतरण की यही प्रक्रिया है। रीतिकाव्य में रसिकता और शास्त्रीयता का योग हुआ है जो उस युग के एकांत वातावरण के अनुकूल है"। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने कहा है कि रीतिकाव्य के विवेचन में डॉ. नगेन्द्र ने दिखाया है कि इसका स्वरूप प्रायः गार्हस्थिक है, पर यह गार्हस्थिकता चंद, जायसी, सूर या तुलसी की परिकल्पना से भिन्न है। उन्होंने

आगे लिखा है कि "रीतिकालीन काव्य की विशेषता इस बात में है कि उसकी मूल प्रेरणा लौकिक है। रीतिकाल में कवि ईश्वर और मनुष्य - दोनों का चित्रण मनुष्य रूप में करता है"। रामस्वरूप चतुर्वेदी जी ने यह माना है कि उत्तर रीतिकाल में काव्य-भाषा का सामान्य रूप क्रमशः स्थिर और शास्त्रीय होता गया है। उनका मानना है कि रीतिकालीन काव्य भले राज्याश्रय में लिखा गया है, तत्कालीन रचित ग्रंथ आश्रयदाताओं को समर्पित है और नामकरण भी इन आश्रयदाता राजाओं के नाम पर हुआ है।

— क्रमशः